Q. वियना कांग्रेस की उपलब्धियों पर प्रकाश डाले?

Ans:— 1815 ई० में वाटरलू के युद्ध में मित्र राष्ट्रों ने क्रान्ति के पुत्र नेपोलियन को पराजित कर उसे सेंट हेलना के निर्जन टापू पर भेज दिया। नेपोलियन के पतन के साथ ही फ्रांस में क्रान्ति के युग की भी समाप्ति हो गयी। नेपोलियन ने अपनी विजयों के द्वारा यूरोप के मानचित्र में जो परिवर्तन कर दिए थे, उसका पुन निर्माण करने के लिए आस्ट्रिया की राजधानी विएना में यूरोप के प्रमुख राजनीतिक एकत्र हुए। इस सम्मेलन को विएना कांग्रेस कहा जाता है। इस सम्मेलन के लिए विएना को चुनने का कारण यह था कि यह महाद्वीप के मध्य में था। इसके अतिरिक्त यह नेपोलियन के युद्धों का भी केंद्र रहा था तथा नेपोलियन की पराजय में आस्ट्रिया के प्रधानमंत्री मैटरनिख के युद्धों का भी केन्द्र रहा था तथा नेपोलियन की पराजय में आस्ट्रिया के प्रधानमंत्री मैटरनिख का प्रमुख हाथ रहा था। फार्गुसन तथा ब्रून ने कांग्रेस का स्थान विएना चुनने के लिए एक अन्य कारण भी बताया है। उन्होंने लिखा है कि प्रतिक्रियावादियों के सम्मेलन के लिए यूरोप के सर्वाधिक प्रतिक्रियावादी राष्ट्र (आस्ट्रिया) की राजधानी विएना को सम्मेलन स्थल बनाना स्वाभाविक एवं ही था।

(A) विएना कांग्रेस के प्रमुख प्रतिनिधि :-

विएना कांग्रेस सितम्बर 1814 ई० में प्रारम्भ हुई किन्तु इससे पूर्व कि इसमें कुछ निर्णय लिए जाते, नेपोलियन एल्बा द्वीप से भाग निकलने में सफल हो गया। अतः कुछ समय के लिए इस कांग्रेस को स्थगित करना पड़ा। यह कांग्रेस पुनः नवम्बर 1814 ई. में प्रारम्भ हुई तथा नेपोलियन के वाटरलू के युद्ध में पराजित होने (18 जून, 1815 ई.) के कुछ दिन पूर्व ही (9 जून, 1815 ई. को) इस कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने अन्तिम निर्णयों पर हस्ताक्षर किए।

विएना कांग्रेस में कुल 90 बड़े महाराजा तथा 63 राजा या उनके प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। टर्की के अतिरिक्त यूरोप के प्रत्येक राष्ट्र के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित हुए थे। यूरोप के इतिहास में पहली बार इतना विशाल सम्मेलन का आयोजन हुआ। यद्यपि विएना कांग्रेस में विशाल संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, किन्तु चार महाशक्तियों (इंग्लैण्ड, रूस, आस्ट्रिया व प्रशा) को इस कांग्रेस में विशेष स्थान प्राप्त था तथा इस कांग्रेस के निर्णय भी मुख्यतया इनके प्रतिनिधियों द्वारा ही निर्धारित किए गए थे।

विएना कांग्रेस में भाग लेने वाले प्रमुख देश एवं उनके प्रतिनिधि निम्नलिखित थे:

(1) आस्ट्रिया :— विएना कांग्रेस में आस्ट्रिया का प्रतिनिधि मैटरनिख था, जो इस कांग्रेस में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों में निःसन्देह सर्वोपरि एवं असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी था। आस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस प्रथम (1792 - 1835 A.D.) ने 1809 ई० में मैटरनिख को आस्ट्रिया का प्रधानमंत्री नियुक्त किया था। 1809 ई० से 1848 ई० तक मैटरनिख यूरोप की राजनीति पर छाया रहा। यही कारण है कि इस काल को 'मैटरनिख का युग' कहा जाता है। इसी कारण उसे विएना कांग्रेस का अध्यक्ष भी बनाया गया था।

(2) रूस :— विएना कांग्रेस में रूस का प्रतिनिधि जार एलेक्जेण्डर प्रथम था। एलेक्जेण्डर प्रथम शक्तिशाली शासक था, किन्तु उसमें मैटरनिख के समान राजनीतिक एवं कूटनीतिक गुण न थे। नेपोलियन को पराजित करने में उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी, इसी कारणवश उसे इस कांग्रेस में आमंत्रित किया गया था। केटलबी ने लिखा ~~है~~ है कि एलेक्जेण्डर प्रथम एक कल्पनाशील, अस्थिर, अभिमानी, सरलता से प्रभावित होने वाला

तथा अव्यावहारिक व्यक्ति था। मैटरनिख उसे एक पागल व्यक्ति समझता था, किन्तु उसके विचारों की आसानी से अवहेलना नहीं की जा सकती थी, क्योंकि वह एक शक्तिशाली शासक था। इंग्लैण्ड व आस्ट्रिया भी उसकी बढ़ती हुई शक्ति से भयभीत थे।

(3) प्रशा — विएना कांग्रेस में प्रशा का प्रतिनिधि हार्डेनबर्ग था। हार्डेनबर्ग राष्ट्रवाद एवं सैनिकवाद में विश्वास रखनेवाला व्यक्ति था। अपने देश को शक्तिशाली बनाना उसका प्रमुख उद्देश्य था।

(4) इंग्लैण्ड — इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि के रूप में वहां का विदेशमंत्री कैसलरे विएना आया था। कैसलरे एक योग्य व्यक्ति एवं कुशल राजनीतिज्ञ था। इंग्लैण्ड ने नेपोलियन को पराजित करने में सर्वप्रमुख भूमिका निभाई थी, अतः इस कांग्रेस में इंग्लैण्ड का विशेष स्थान था। नेपोलियन के विरुद्ध युद्धों में इंग्लैण्ड ने मित्र राष्ट्रों के लिए साहूकार का कार्य किया था तथा इन युद्धों से इंग्लैण्ड की आर्थिक स्थिति डावांडोल हो गयी थी। राष्ट्रीय ऋण पहले से चार गुना हो गया था। अतः कैसलरे को इस कांग्रेस में अपने देश के राजनीतिक एवं आर्थिक दोनों ही पक्षों को देखना था तथा अपने उद्देश्य में कैसलरे सफल भी हुआ। राजनीतिक रूप से इंग्लैण्ड शक्ति-सन्तुलन बनाए रखना चाहता था, ताकि यूरोप में शान्ति की स्थापना की जा सके। मैटरनिख के पश्चात इस कांग्रेस में कैसरले दूसरा महत्वपूर्ण व्यक्ति था।

(5) फ्रांस — फ्रांस की ओर से प्रतिनिधित्व तालीरां ने किया। तालीरां नेपोलियन के अधीन 1797 ई० से 1807 ई० तक फ्रांस का विदेशमन्त्री रहा था, किन्तु स्पेन एवं पुर्तगाल पर नेपोलियन द्वारा आक्रमण की योजना का विरोध करने के कारण उसमें तथा नेपोलियन में तनाव उत्पन्न हो गया। नेपोलियन के शब्दों में, "वह रेशमी कपड़ों में लिपटा हुआ गोबर का टुकड़ा था।" अतः तालीरां मित्र

राष्ट्रों से मिल गया। तालीरां अत्यन्त अनुभवी राजनीतिज्ञ था, उसी के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप फ्रांस को इस कांग्रेस की चार महाशक्तियों के साथ स्थान मिला तथा उसके 'वैधता के सिद्धान्त' के प्रस्ताव को भी मान लिया गया। इस प्रकार यूरोपीय राजनीति में तालीरां ने फ्रांस को पुनर्स्थापित करने का प्रयत्न किया।

(B) वियना कांग्रेस के सम्मुख प्रमुख समस्याएं :—

वियना कांग्रेस के सम्मुख निम्नलिखित प्रमुख समस्याएं थी:—

(i) शान्ति की स्थापना :— नेपोलियन के विरुद्ध संघर्ष के समय मित्र-राष्ट्रों ने उसे शान्ति एवं मानवता का शत्रु घोषित किया था। उसके विरुद्ध युद्धों से हुए रक्तपात एवं जनसंकट की सम्पूर्ण जिम्मेदारी नेपोलियन पर ही डाली थी। मित्र राष्ट्रों ने घोषणा की थी कि वे अत्याचार एवं सामाजिक अन्याय के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे, अतः नेपोलियन के पतन के पश्चात् जनसाधारण यह अपेक्षा कर रहा था कि वियना कांग्रेस के द्वारा न केवल अन्तर्यूरोपीय शान्ति की स्थापना की जाएगी, वरन् यह एक शान्ति एवं सद्भावनापूर्ण विश्व की आधारशिला रखने में भी सफल होगी। अतः वियना कांग्रेस के समक्ष सर्वप्रथम एवं महत्वपूर्ण कार्य यूरोप में स्थायी शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करना था।

(ii) पराजित राजाओं को दण्डित करना — मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध जिन देशों ने नेपोलियन को सहायता दी थी, उन्हें किस प्रकार दण्डित किया जाए, यह इसी कांग्रेस के द्वारा निर्धारित किया जाना था।

(iii) यूरोप का पुनर्निर्माण — नेपोलियन ने अपनी सभी सैनिक विजयों के द्वारा यूरोप के मानचित्र को ही बदल दिया था। उसने अनेक राज्यों को विजित

कर फ्रांस के अधीन कर दिया था। अतः विएना कांग्रेस के समक्ष यह प्रश्न था कि ऐसे राज्यों का क्या जाए तथा यूरोप का पुनर्निर्माण किस प्रकार किया जाए।

(iv) फ्रांस की शक्ति पर अंकुश लगाना — नेपोलियन के विरुद्ध युद्धों में मित्र राष्ट्रों को अपार जन-धन की हानि को सहना पड़ा था। अतः अनेक लिए आवश्यक था कि वे कुछ ऐसी व्यवस्था करें, जिससे भविष्य में फ्रांस पुनः अन्य यूरोपीय राज्यों के ~~क्या किया जाए तथा यूरोप का पुनर्निर्माण किस प्रकार किया जाए।~~ लिए खतरा न बन सके।

(v) चर्च की समस्या - विएना कांग्रेस के समक्ष एक धार्मिक समस्या थी। नेपोलियन तथा कुछ अन्य देशों के नेताओं ने गिरजाघरों की भूमि को किसानों को बेच दिया था तथा चर्च को राजकीय संस्था घोषित कर दिया था। इस प्रकार चर्च की सम्पूर्ण सम्पत्ति राज्य के अधीन हो गयी थी। प्रतिक्रियावादी शासक, नेपोलियन के पश्चात चर्च तथा उससे सम्बन्धित संस्थाओं की पुनर्स्थापना करना चाहते थे।

(vi) क्रान्ति की समस्या — फ्रांस की क्रान्ति ने यूरोप को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था। इस क्रान्ति ने अपने स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व की भावनाओं को विश्वव्यापी बना दिया था। अनेक देशों के लोग इन भावनाओं से प्रभावित होकर अपने-अपने देशों में जनतन्त्रात्मक शासन-पद्धति की स्थापना करना चाहते थे। विएना कांग्रेस के प्रतिनिधि प्रमुखतया प्रतिक्रियावादी होने के नाते ऐसा नहीं होने देना चाहते थे। अतः उनके समक्ष यह भी समस्या थी कि किसी प्रकार स्वतन्त्रता, समानता व भ्रातृत्व की भावनाओं को फैलने से रोकें तथा अन्य देशों में क्रान्ति की सम्भावनाओं को क्षीण करें। इस प्रकार क्रान्तिकारी और प्रतिक्रियावादी

सिद्धान्तों के संघर्ष का फैसला करना विएना काँग्रेस के लिए के लिए एक दर्द था।

(iii) विजित प्रदेशों का बंटवारा — नेपोलियन को परास्त करने में मित्रराष्ट्रों ने अत्यधिक संघर्ष किया था तथा अपार जन-धन की हानि को सहा था। अतः इस कांग्रेस में उपस्थित मित्रराष्ट्रों में से प्रत्येक का प्रतिनिधि विजित प्रदेशों में से अधिक से अधिक प्राप्त करना चाहता था। अतः मित्रराष्ट्रों में जीते हुए प्रदेशों को विभाजित भी इसी कांग्रेस में होना था।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्याओं का हल ढूढने के उद्देश्य से यह कांग्रेस नवम्बर 1814 ई० में प्रारम्भ हुई।

(C) विएना कांग्रेस की कार्य-प्रणाली :—

विएना कांग्रेस के कार्य करने की कोई ठोस एवं निश्चित प्रणाली नहीं थी। प्रारम्भ में चार प्रमुख राष्ट्र - इंग्लैण्ड, रूस, आस्ट्रिया, और प्रशा - अपने हितों को प्राप्त करने के लिए कांग्रेस को अपनी इच्छानुसार संचालित करना चाहते थे, किन्तु फ्रांस के प्रतिनिधि तालीरां ने उनकी इस कार्य-पद्धति को चुनौती दी तथा उन्हें आठ राज्यों की समिति बनाने के लिए विवश किया। ये आठ राज्य - इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया, रूस, प्रशा, फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल तथा स्वीडन थे। जनवरी 1815 ई० में फ्रांस को भी पांचवां राज्य मान लिया गया। विशिष्ट समस्याओं पर विचार करने के लिए 10 उपसमितियों की भी घोषणा की गयी। इन समितियों के बन जाने के पश्चात भी इस कांग्रेस पर पांच बड़े राज्यों का ही प्रभुत्व बना रहा।

इसके अतिरिक्त इस कांग्रेस में किसी भी विषय पर निर्णय लेने का कोई निश्चित तरीका नहीं था। न तो कोई प्रस्ताव पारित होते थे और न ही वोट आदि देने जैसी कोई व्यवस्था थी नाच घरों तथा

बड़ी-बड़ी दावतों में राज्य की सीमाओं का निर्धारण हो जाता था। गम्भीर राजनीतिक समस्याएं सम्मेलनों में तय हो जाती थीं। किसी प्रतिनिधि ने मजाक में कोई बात कही, वह दूसरों को अच्छी लगी तो उसे मान लिया जाता था। इस प्रकार वास्तविक कांग्रेस जिस प्रकार होती है, उसका एक प्रकार से मजाक उड़ाया गया। यही कारण है कि हेज ने इसकी अलोचना करते हुए लिखा है, "विएना कांग्रेस वास्तव में कोई कांग्रेस नहीं थी।" डॉ॰ विमल चंद्र पाण्डे ने लिखा है कि इसका अर्थ हुआ कि इस कांग्रेस में जो निर्णय हुए थे, वे उस कांग्रेस के पूर्व ही गुप्त अथवा खुले रूप से तय कर लिए गए थे। विएना कांग्रेस ने तो केवल पंजीकरण का कार्य किया। इसमें ~~कूटनीतिओं~~ कूटनीतिओं का दोष नहीं था। यह तो उन्हें विवशतावश करना पड़ा था, क्योंकि पूर्व सन्धियों एवं गुप्त सन्धियों के कारण उनके हाथ बंधे थे।

(D) विएना कांग्रेस के प्रमुख सिद्धान्त :-

विएना कांग्रेस के पांच महाशक्तिओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। अत: इस कांग्रेस में हुए निर्णय भी उन्हीं के हितों को ध्यान में रख लिए गये थे। विएना कांग्रेस के लिए निर्णय तीन प्रमुख सिद्धान्तों से सर्वाधिक लाभ इन्हीं शक्तिओं को होना था।

विएना कांग्रेस के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित थे:

(i) न्यायोचित राजवंश का सिद्धान्त :- वियना कांग्रेस में फ्रांस का प्रतिनिधि तालीरां फ्रांस में बूर्बो वंश को प्रतिस्थापित करना चाहता था, अत: उसने न्यायोचित राजवंश के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार यूरोप के उन देशों के वे पुराने राजवंश जो फ्रांस की क्रान्ति अथवा नेपोलियन की विजयों द्वारा अपदस्थ कर दिए गए थे, पुन: राजगद्दी पर आसीन किए गए। इस सिद्धान्त के कारण फ्रांस में बूर्बो वंश की पुनर्स्थापना हो गयी।

(ii) शक्ति सन्तुलन का सिद्धान्त :- यूरोप के राष्ट्र - नेपोलियन के विरुद्ध निरन्तर युद्धों से तंग आ गए थे, अतः यूरोप में ऐसी व्यवस्था करना चाहते थे जिससे स्थायी शान्ति की स्थापना हो सके। यूरोप के राजनीतिज्ञों, विशेषकर के सिद्धांत का पालन किया जाए। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी देश को इतना शक्तिशाली होने से रोकना था कि वह अन्य देशों के लिए खतरा बन जाए। ~~फ्रांस भी देश को इतना शक्तिशाली होने से रोकना~~ फ्रांस पिछले 25 वर्षों तक यूरोप के अन्य देशों के लिए खतरा बन रहा था, अतः विएना कांग्रेस में शक्ति सन्तुलन के सिद्धान्त के द्वारा उसे चारों ओर से शक्तिशाली राष्ट्रों से घेर दिया गया।

(iii) पुरस्कार एवं दण्ड का सिद्धान्त :- यूरोप के जिन मित्र - राष्ट्रों ने नेपोलियन का सामना किया था उन्हें अपार हानि का सामना करना पड़ा था, अतः वे राष्ट्र युद्धों में हुई क्षति की पूर्ति करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त ~~सामना करना पड़ा था, अत~~ मित्र-राष्ट्रों को सहायता करने वाले देशों को पुरस्कार देना तथा नेपोलियन का साथ देने वाले देशों को दण्डित करना भी विएना कांग्रेस में आवश्यक समझा गया था। इस सिद्धांत के अन्तर्गत इसी बात का पालन किया गया था। उदाहरणार्थ, डेनमार्क जिसने नेपोलियन की सहायता की थी, से नार्वे छीनकर स्वीडन को दे दिया गया, क्योंकि स्वीडन मित्र - राष्ट्रों के साथ रहा था।

(E) विएना कांग्रेस द्वारा यूरोप का पुनर्निर्माण :- नेपोलियन द्वारा अस्त - व्यस्त किए गए यूरोप की पुनर्व्यवस्था करने हेतु ही विएना कांग्रेस में ऊपर वर्णित तीन प्रमुख सिद्धांतों का पालन करते हुए अनेक निर्णय लिए गए, जिन्होंने यूरोप के मानचित्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। विएना कांग्रेस के निर्णयों से यूरोप के

प्रत्येक देश में हुए परिवर्तन का वर्णन निम्नलिखित है :

(1) फ्रांस — रूस तथा प्रशा फ्रांस को पूर्ण रूप से कुचलने के पक्ष में थे, किन्तु इंगलैण्ड का प्रतिनिधि इसके विरुद्ध था। कैसलरे का कहना था, "हमारा उद्देश्य दूसरे देशों से बड़े-बड़े उपहार या भेंट एकत्र करना नहीं है बल्कि हम यह चाहते है कि सारे संसार में सुख-शान्ति की स्थापना हो जाए।" अतः फ्रांस के प्रति भी बहुत कठोर रुख नहीं अपनाया गया। किन्तु फिर भी फ्रांस से उन समस्त प्रदेशों को छीन लिया गया जो उसने नेपोलियन के समय में अपने अधिकार में कर लिए थे। फ्रांस की सीमाएं वही निर्धारित की गयी जो 1790 ई० से पहले थीं। फ्रांस पर 70 करोड़ फ्रैंक का युद्ध हर्जाना भी लगाया गया तथा यह तय किया गया कि जब तक फ्रांस इस युद्ध हर्जाने को नहीं देगा, तब तक वैलिंगटन (इंग्लैण्ड का सेनापति) के नेतृत्व में मित्र राष्ट्रों की एक सेना वहां रहेगी। फ्रांस की महत्वाकांक्षाओं को रोकने के लिए उसके चारों ओर शक्तिशाली राज्यों की स्थापना की गयी। उत्तर में हॉलैण्ड के साथ बेल्जियम, दक्षिण में सार्डीनिया - पीडमाण्ट के साथ जेनेवा का राज्य तथा पूर्व में प्रशा के साथ राइन प्रदेश को मिलाकर फ्रांस को शक्तिशाली राज्यों से घेर दिया गया।

इसके अतिरिक्त तालीरां की इच्छानुसार न्यायोचित राजवंश के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए फ्रांस में बूर्बो वंश की पुनर्स्थापना की गयी तथा लुई अठारहवें को फ्रांस का शासक स्वीकार किया गया।

(2) रूस — वियना कांग्रेस से रूस को काफी लाभ हुआ। नेपोलियन के विरुद्ध युद्धों में रूस ने फिनलैण्ड व बसराबिया जीता था। इन प्रदेशों पर उसका ही अधिकार मान लिया गया। इसके अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व की ओर टर्की के क्षेत्रों पर भी उसका अधिकार मान लिया गया। इसके अतिरिक्त दक्षिण - पूर्व की ओर टर्की

के क्षेत्रों पर भी उसका अधिकार बना रहा।
हेजन ने लिखा है कि रूस को सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि 'ग्राण्ड डची ऑफ वारसा' का अधिकांश भाग उसे प्राप्त हो गया, जिससे उसकी सीमाएं यूरोप में पश्चिम की ओर काफी दूर तक फैल गयी। यूरोप में रूस के राजनीतिक महत्व में वृद्धि हुई।

(3.) हॉलैण्ड — फ्रांस को उत्तर में बढ़ने से रोकने के लिए हॉलैण्ड में बेल्जियम को मिला दिया गया तथा वहाँ औरेन्ज वंश की स्थापना की गयी।

(4.) प्रशा — वियना कांग्रेस से लाभान्वित होने वाले प्रमुख देशों में प्रशा भी एक था। प्रशा को अनेक नवीन प्रदेश प्राप्त हुए जिनमें प्रमुख राइन नदी का पश्चिमी प्रदेश, सैक्सनी राज्य का लगभग आधा भाग, पोलैण्ड एवं पोमेरेनिया के भी कुछ प्रदेश थे। इन प्रदेशों पर अधिकार होने से प्रशा की शक्ति में वृद्धि हुई तथा उसकी गणना यूरोप के प्रमुख प्रदेशों में होने लगी।

वियना कांग्रेस ने जर्मनी के अनेक राज्यों के विषय में भी निर्णय लिए। जर्मनी में प्रशा के अतिरिक्त कुल 38 राज्यों को कायम रखा गया जिन्हें नवीन जर्मन राज्य संघ के अधीन रखा गया। इस संघ को 'जर्मन परिसंघ' कहा गया। इस नवीन जर्मन परिसंघ की एक केन्द्रीय राज्य राज सभा बनायी गयी, जिसका अध्यक्ष आस्ट्रिया को बनाया गया।

(5) स्विटजरलैंड → स्विटजरलैंड को तटस्थ देश घोषित किया गया। फ्रांस के तीन प्रदेशों को भी स्विटजरलैंड को दे दिया गया, जिससे उसकी शक्ति में वृद्धि हुई।

(6) स्पेन → स्पेन में बूर्बा वंश की पुनर्स्थापना की गयी तथा फर्डिनेण्ड सप्तम को वहाँ का शासक बनाया गया। स्पेन से ट्रीनिडाड लेकर इंग्लैण्ड को दिया गया।

(7) पुर्तगाल — पुर्तगाल ने यद्यपि मित्र राष्ट्रों की मदद की थी, किन्तु फिर भी उसे कुछ नहीं दिया गया। फिनलैण्ड स्वीडन से लेकर रूस को दे दिया गया।

(8) डेनमार्क एवं स्वीडन — डेनमार्क ने नेपोलियन की सहायता की थी, किन्तु फिर भी उसे कुछ नहीं दिया गया। पुर्तगाल में जॉन चतुर्थ का शासन पुनः स्थापित किया गया। अतः उससे नार्वे छीनकर स्वीडन को दे दिया गया। फिनलैण्ड स्वीडन से लेकर रूस को दे दिया गया।

(9) इटली — इटली को वियना कांग्रेस से अत्यधिक हानि हुई। इटली के विषय में महाशक्तियों ने पहले ही तय कर लिया था कि आस्ट्रिया को इसमें से नीदरलैण्ड में हुई हानि का मुआवजा दिया जाएगा। अतः आस्ट्रिया को लोम्बार्डी तथा वेनेशिया प्रदेश दे दिए गए, जो इटली के सबसे धनी और सैनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रान्त थे। इसके अतिरिक्त नेपल्स में बूर्बो वंशीय शासक फर्डिनेण्ड सप्तम को पुनर्स्थापित किया गया। पीडमाण्ट का राज्य सार्डीनिया को दे दिया गया। इस प्रकार सार्डीनिया एक शक्तिशाली राज्य के रूप में परिणत हो गया। इससे फ्रांस के लिए दक्षिण-पूर्व में भी बढ़ना कठिन हो गया। टस्कनी तथा मोडेना में पुनः पुराने राजवंशों की स्थापना की गयी तथा नेपोलियन की पत्नी मारिया लुईसा को, जो आस्ट्रिया की राजकुमारी थी, परमा राज्य दे दिया गया। इस प्रकार इटली पर ~~आस्ट्र~~ आस्ट्रिया का प्रभुत्व बना रहा तथा इटली मात्र एक भौगोलिक नाम रह गया।

(10) आस्ट्रिया — वियना कांग्रेस से ~~सर्वाधिक~~ लाभान्वित होने वाले देशों में एक आस्ट्रिया भी था। वियना कांग्रेस का अधिवेशन मैटरनिख की अध्यक्षता में हुआ था, अतः मैटरनिख ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया व अपने देश के सम्मान और शक्ति में वृद्धि करने में सफल हुआ। आस्ट्रिया को पोलैण्ड के कुछ क्षेत्र, एड्रियाटिक के पूर्वी तट

पर स्थित इलीरियन प्रान्त, लोम्बार्डी और वेनेशिया के प्रदेश प्राप्त हुए। इस प्रकार आस्ट्रिया को ऐसे प्रदेश प्राप्त हुए जिससे केन्द्रीय यूरोप में उसकी शक्ति बढ़ गयी।

(ii) इंगलैण्ड — विएना कांग्रेस से सर्वाधिक लाभ इंगलैण्ड को हुआ। इंगलैण्ड, जो नेपोलियन का सर्वप्रमुख शत्रु था तथा जिसने बार-बार उसके विरुद्ध गुटों का निर्माण किया था, तथा जिसने मित्र राष्ट्रों के लिए साहूकार का कार्य किया था, को यूरोप से बाहर अनेक प्रदेश मिले, जिससे के औपनिवेशिक साम्राज्य में पर्याप्त वृद्धि हुई। इंगलैण्ड का उत्तर सागर में स्थित हेलीगोलैण्ड, भूमध्य सागर में स्थित माल्टा तथा आयोनियन द्वीपसमूह, दक्षिण अफ्रीका में केप कोलोनी तथा श्रीलंका एवं अन्य द्वीपों पर आधिपत्य हो गया। इन उपनिवेशों के मिलने से इंगलैण्ड सर्वश्रेष्ठ औपनिवेशिक शक्ति बन गया।

इस प्रकार अपने विभिन्न निर्णयों के द्वारा विएना कांग्रेस ने यूरोप के मानचित्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए।

उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त, विएना कांग्रेस ने कुछ अन्य भी महत्वपूर्ण कार्य किए गए, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित थे :

(i) दास प्रथा समाप्त करने का प्रयास — तत्कालीन यूरोप के कुछ देशों में दास प्रथा प्रचलित थी। अफ्रीका के काले दासों का व्यापार अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रारम्भ हुआ था, जिससे इंगलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल तथा फ्रांस आदि लाभान्वित हो रहे थे। इस प्रथा के विरोध में इंगलैण्ड में विल्बरफोर्स के नेतृत्व में प्रबल आन्दोलन चल रहा था। अतः विएना कांग्रेस में कैसलरे ने इस कुप्रथा को समाप्त कराने का प्रयास किया। यद्यपि कैसलरे अपने प्रयत्न में पूर्णतया सफल न हो सका, किन्तु फिर भी

इस कांग्रेस में एक प्रस्ताव पारित हुआ जिसके द्वारा दास प्रथा को अनैतिक, अमानवीय तथा सभ्यता और मानव अधिकारों के विपरीत बताया गया।

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय कानून — यूरोप की कुछ समस्याओं का हल ढूंढने के लिए विएना कांग्रेस में अन्तर्राष्ट्रीय कानून बनाने का प्रयास किया गया। इन कानूनों के अन्तर्गत प्रमुख युद्ध और शान्तिकाल में व्यापार एवं वाणिज्य, अन्तर्राष्ट्रीय जल का उपयोग, आदि थे।

(iii) यूरोपीय संयुक्त व्यवस्था की स्थापना — यूरोप में शान्ति बनाए रखने के उद्देश्य से एक संस्था का भी निर्माण किया गया, जिसे यूरोपीय संयुक्त व्यवस्था कहा गया।

उपर्युक्त निर्णयों पर 9 जून, 1815 ई. को विएना कांग्रेस के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर हुए।

(F) मुल्यांकन :— विएना कांग्रेस के निर्णयों का यूरोपीय इतिहास में विशेष ~~स्थान~~ स्थान है। इस कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य विश्व शान्ति के लिए व्यावहारिक व्यवस्था करना था। प्रो॰ फिके के अनुसार, विएना समझौते के नियम, दो युगों को सीमा बनाने के कारण, इतिहास में अपना विशेष महत्व रखते हैं। इस कांग्रेस के द्वारा क्रान्तियों एवं युद्धों के युग की समाप्ति हुई तथा प्रतिक्रियावादी एवं परम्परावादी शासन की यूरोपीय राष्ट्रों में स्थापना हुई।